धुर द पैगाम
एक औंकार सतिगुरू प्रसादि
आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
हक
हक
तपंः तपो
नमो नमः
मेरे
साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
" करम-धरम " पाखंड जो दीसह - तिन जम जागाती लूटै ।
" निरबाण कीरतन " गावह करते का " निमख सिमरत " जित छूटै ।
{ निरबाण कीरतन :- यानि के लगातार - न रुकने वाला - स्वयं से उत्पन्न अर्थात जो एक रागमई प्रकाशित आवाज
विशेष अथवा जिसे एक मूल आधार रूपी ईश-प्रभु-अल्लाह इत्यादि भी कह कर जाना जाता है । }
Www.9009.co.in

35.&36. "रूहानी सत्संग"

A. शब्द - गुरू - सुरत - धुन - चेला ! गुरू - गोबिन्द - गुण - नाम - धुन - बाणी । स्मिृत - शास्त्र - वेद बखाणी । "साच्चा तीर्थ" हर का नाउ - नाउ शब्द विचार - अन्तर ज्ञान है ....! ज्ञान न गल्ली ढूंडिये - कथना करड़ा सार...!

B. सतगुरु नो सब कोई वेखदा - जेता जगत संसार ! * डिटठया मुक्त न होवई - जिच्चर शब्द न करे विचार...! सब कुछ घर मह - बाहर नाही । बाहर टोलै भ्रम भुलाई । *घर ही मह अमृत भरपूर हैं - मनमुखा स्वाद न आया । ज्यों कस्तूरी मृग न्ह जाणै भृमदा भ्रम भुलाई ।

C. अन्तर ज्योति - निरन्तर बाणी - साचै साहिब सियो चित लाई । *काइया महल - मन्दर घर हर का - तिस मेह रखी ज्योत अपार । *गुरमुख + सिख सोई जन जाने - जिस नूह नदर करे करतार ।

D. माइआ ममता मोहणी जिन विण दंता जग खाइआ । मनमुख खाधे गुरमुख उबरे जिनी सच नाम चित लाइआ । बिन नावै जग कमला फिरै गुरमुख नदरी आइआ । धंधा करदिआ निहफल जनम गवाइआ सुखदाता मन न वसाइआ । नाम - शब्द - अमृत (मूल तत) तिना को मिलिआ जिन को धुर लिख पाइया ।

E. ऐह जो दुनीआ सिहर मेला दसतगीरी नाह । वेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकर न जाइ । टुक दम करारी जउ करह हाजिर हजूर खुदाई । बदे खोज दिल हर रोजना फिर परेशानी माह । मन तू ज्योति स्वरूप हैं अपना मूल पहचान...!

F. जो न भजते नाराइणा - तिन का मै न करउ दरशना । पर धन पर दारा परहरी - ता कै निकट बसै नरहरी । जिन के भीतर है अंतरा - जैसे पस तैसे ओइ नरा ।

G. सुचै ऐह न आखीअह बहन जे पिंडा धोई । सुच्चा (पवित्र) केवल वही एक आत्मा विशेष हैं जिसके मन - बुद्धि - चित - अहं में केवल एक (मूल सत) रूपी शब्द - नाम ही सदा निरन्तर बसत हैं ।

H. हक पराईआ नानका उस सूअर उस गाय । गुर पीरहामा ता भरे जेमुरदार न खाई । मारण पाह हराम मह होई हलाल न जाई । गली भिष्त न जाईऐ छुटै सच कमाई । अगर आप कूड़े की गल्ली में नाचो - गाओ - कूदोगे तो यकीनन आपके पल्ले केवल कूड़ ही पड़ेगी !

I. सचता पर जाणिऐ जा रिदै सचा होई ।सच ता पर जाणिऐ जा सच धरेपिआर । सचता पर जाणिऐ जा जुगत जाणै जीउ । सच ता पर जाणिऐ जा सिख सची लेई ।सच ता पर जाणिऐ जा आतम तीरथ करे निवास । सच सभना होई दारू पाप कढै

धोई - अर्थात यह बात केवल उसी आत्मा विशेष तक ही सीमित विशेष है - जिनके पास अथक पुरुषार्थ से कमाया हुआ निजी भंडार रूपी धन "सच" विशेष है...?

धरमी धरम करह गावावह मंगह मोख दुआर - सुच्च होवे ता सच पाईऐ ।

ऐसा जग देखया जुआरी - सब सुख मागे नाम विसारी।

J. कूड़ (कूड़ा सभ संसार) बोल मुरदार खाई अवरै नू समझावण जाई । मुट्ठा आप मुहाये साथै - गुरू साहिब लिख कर समझा रहे हैं कि - (मत - धर्म - नीति - सभा - स्टेट - मुल्क - कमेटी - पंथो - मार्गो इत्यादियों के..) "ऐसा आगू जापै" यानि के - (प्रधान - सभापति - गुरू - पादरी - सतगुरू - इंचार्ज - ब्राह्मण - नेता - मौलवी - हैड - लीड़र - भाई - खोजी इत्यादि वगैरह-वगैरह बताये तथा महान - महापुरूष साबित किये जाते रहे हैं.....!

K. काचा धन संचह मूरख गंवार । मनमुख भूले अंध - गंवार । बिखिआ कै धन सदा दुख होई । ना साथ जाई न परापत होई । चह जुग मह अमृत साची बाणी (केवल रागमई प्रकाशित आवाज विशेष)। पूरै भाग (केवल स्वंय का अथक परमार्थी पुरूषार्थ) हर नाम समाणी । सिध साधिक तरसह सभ लोई ।उत्तम ब्रहम पछाणै कोई.....? सच साचा सच आप द्रिड़ाए - आपे वेखै आपे सच लाए ।

L. हे मूल तत के सत रूपी अंश - महापुरूष "हर गुण गाई ले" क्योंकि ऐ टू जैड "सब सुपन समानयों" (केवल एक तुझ भार - रहीत सत रूपी आत्मा विशेष को छोड़ के..!)

M. अंतर मैल जे तीरथ नाहवै तिस बैकुंठ न जाणां । लोक पतीणे कछू न होवै नाही राम अयाणां । जल कै मजन जे गत होवै नित नित मेंढक नावह । जैसे मेंढक तैसे ओइ नर फिर फिर जोनी आवह ।

N. अंधे गूगे अंध अंधार । "पाथर ले पूजह" (सभी भूतकालीन महापुरूषों - देवी - देवो सहित कागज - जल - पत्थरों - कब्रों इत्यादि (जड़-भूतों) की बंदना - अर्चना - कर्मकाण्ड वगैरह-वगैरह करना.....!) "मुगध गवार"। ओहि जा आपि डूबे तुम कहां तरणहार ।

O. जे मोहाका घर मुहै घर मुह पितरी देई । अगै वसत सिजाणीऐ पितरी चोर करेई । वढीअह हथ दलाल के मुसफी एह करेई । गुरू जी बता रहे हैं कि हे जीव आगे तुझे केवल वही कुछ प्राप्त होगा जिसे तूने जीते जी अकथ प्रयासों द्वारा प्राप्त किया हैं (अगे सो मिले जि खट्टे घाले देई)

P. पढ़ पढ़ गडी लदी अह पढ़ पढ़ भरीअह साथ । पढ़ पढ़ बेड़ी पाईऐ पढ़ पढ़ गडीअह खात । पड़ीअह जेते बरस बरस पड़ीअह जेते मास । पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअह जेते सास ।

गुरू जी लिख रहे हैं कि जीते जी अगर इक गल्ल अर्थात सुरत शब्द का संयोग नहीं हुआ तो जो कुछ भी तूने अकथ प्रयासों द्वारा संसार - परमार्थ इत्यादि वगैरह कमाया हुआ हैं - वो केवल तेरे अंहकार का प्रतिबिंब मात्र ही हैं यानी के पूरा जीवन तूने केवल एक झक ही मारी है..! (होरु हउमै झखणा झाख)

९. तीर्थ नाहवण जाऊं (सभी मत - धर्मों - यकीनो के नाम पर बनाये गये महापवित्र स्थल - कुण्ड - इत्यादि)..! तीर्थ नाम हैं - तीर्थ शब्द विचार - अन्तर ज्ञान हैं । ज्ञान न गल्ली ढूंढिए कथना करड़ा सार..?

नउ दर ठाके धावत रहाए । दसवे निज घर वासा पाए । ओथै अनहद सबद वजह दिन राती

गुरमती सबद सुणावणिआ - "सेवा" सुरत शब्द चित लाए ।